HINDI LITERATURE IN KERALA

Study material

I SEMESTER

B.A HINDI

COMPLEMENTARY COURSE

CU-CBCSS

(2014 Admission)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Calicut university P.O, Malappuram, Kerala, India 673 635.

1022

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study material

I SEMESTER
B.A HINDI

COMPLEMENTARY COURSE

HINDI LITERATURE IN KERALA

Prepared by

DR. PRAMOD KOVVAPRATH
ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF CALICUT

Edited and Scrutinised by

DR. N. GIRIJA
ASSOCIATE PROFESSOR OF HINDI
GOVT. ARTS & SCIENCE COLLEGE
KOZHIKODE

Type settings & Lay out
Computer Section, SDE

©
Reserved

विषय सूची

❖ **Module I**

1. केरल में हिन्दी प्रचार
2. केरल में हिन्दी साहित्य का प्रारंभ
3. स्वतंत्रता पूर्व केरलीय हिन्दी कविता

❖ **Module II**

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता-प्रथम चरण
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता-दूसरा चरण
3. मलयालम काव्यों का हिन्दी में अनुवाद

❖ **Module III**

1. केरल में हिन्दी नाटक एवं एकांकी
2. मलयालम नाटक तथा एकांकियों का हिन्दी अनुवाद

❖ **Module IV**

1. केरल के हिन्दी उपन्यास
2. मलयालम उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद

MODULE I

1. केरल में हिन्दी प्रचार

केरल में हिन्दी प्रचार आन्दोलन बीसवीं शती के दूसरे दशक के बाद शुरु होता है। मद्रास की दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने सबसे पहले मलयालम भाषी युवक श्री. एम. के. दामोदरनुण्णी को केरल भेजा गया। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महात्मा गाँधी और पुरुषोत्तम दास टंडन की भूमिका महत्वपूर्ण है। उण्णी ने अपने परिश्रम से एटुमानूर, कुमरकम, नेल्लूर, कोटयम, मावेलिक्करा, हरिप्पाड, तिरुवनंतपुरम आदि केंद्रों में हिन्दी की जड़ें जमा दी और केरल भर हिन्दी का प्रचार किया।

केरल की प्रथम प्रचारक पीढी के सदस्यों में अधिकांश उण्णी के शिष्य थे। पी. के. केशवन नायर, पं. नारायण देव, अभयदेव, पं.नारायण दत्त, एन. वेंकटेश्वरन, पी.जी.वासुदेव, पी. शिवराम पिल्लाई, के.वी. नायर, एम. के. गोविन्दन उण्णि, के. पदमनाथ पिल्लाई आदि ने हिन्दी सीखी और प्रचार में जुड गये। ए. चन्द्रहासन, पी.के. नारायणन नायर आदि भी इस दिशा में थे।

केरल में हिन्दी आने में तीर्थाटन, व्यापार आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। स्कूल-कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी अध्यापन बाद में शुरु हुआ।

केरल में हिन्दी के विकास की कई मंजिलें मिलती हैं-

a. जनता में प्रचार

b. स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी प्रचार

c. स्कूलों में पाठ्यक्रम का अंग

d. कॉलेजों में पाठ्यक्रम का अंग

e. विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर अध्ययन

f. साहित्य सृजन का माध्यम

2. केरल में हिन्दी साहित्य का प्रारंभ

हिन्दीतर प्रदेशों ने हिन्दी साहित्य को जो योगदान दिया है उसमें केरल का स्थान प्रमुख्र है। भारतीय चिंतनधारा और संस्कृत भाषा के शब्द ऐसे तत्व हैं जिन्होंने दक्षिण की भाषाओं को हिन्दी से जोडा। फिर स्वतंत्रता संग्राम ने हिन्दी सर्जना की प्रेरणा भूमि बनी।

त्रावनकोर महाराज के आश्रित व्यंग्यकार थे कुंचन नंपियार, जो तुल्लल काव्य केलिए प्रसिद्ध थे। नंपियार ने स्यमंतक कथा में ब्राह्मण भोज के प्रसंग पर काशी से आये कुछ गोसाईयों से अपना संवाद हिन्दी में सुनाया है। जैसे-

तुम्हारा मुल्क कौन मुल्क

हमारा मुल्क काशी मुल्क.....

त्रावनकोर के महाराजा स्वातितिरुनाल बहुभाषाविद्, संगीतज्ञ, तथा नृत्यकथा प्रेमी होने के साथ साथ साहित्य एवं संगीत के आचार्य भी थे। उनके गीतों की भाषा ब्रज भाषा थी। हिन्दी के अलावा संस्कृत, मलयालम और मराठी में भी उन्होंने गीतों की रचना की।

स्वातितिरुनाल ने भक्ति परक गीत लिखे। श्रीकृष्ण तथा गोपियाँ इसमें प्रमुख्र विषय है। उनके गीतों में सभी रसों की अभिव्यक्ति हुई है। गेयपदों में मीरा की तन्मयता व्यंजित हीती है। उनमें श्रीपद्मनाभ और श्रीराम की भक्ति भी व्यंजित है।

स्वाति तिरुनाल के गीतों में भावों की दीप्ति आविष्क्रिया एवं ध्वन्यात्मकता काफी मात्रा में मिलती है। व्यंग्य का पुट भी दृष्टव्य है।

स्वतंत्रता के पूर्व 'हिन्दी प्रचार समाचार' और 'दक्षिण भारत' नामक पत्रिकाओं में मुख्य्र रूप से हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं।

3. स्वतंत्रता पूर्व केरलीय हिन्दी कविता

स्वाधीनता पूर्व के हिन्दी कवियों में टी.के.गोविन्दन टेलिचेरी, विमल केरलीय, टी.के. रामन मेनोन, लक्ष्मीकुट्टी देवी, भारती देवी, पी.अम्मिणी देवी आदि प्रमुख हैं। हरिजनोद्धार, ग्रामीण पुनर्निर्माण, अस्पृश्यता-निवारण आदि ज्वलंत समस्याओं को इन्होंने काव्य का विषय बनाया। इसके अलावा सामाजिक विसंगतियों पर भी लिखा।

टी.के. गोविन्दन ने 'अछूत की आह' कविता में अस्पृश्यता को भयानक सामाजिक-रोग बताया। पंक्तियाँ हैं-

दयानिधे, यह उच्चनीचता क्या तुम को भी भाती है?

अछूत कहनेवालों पर दया न तुमको आती है?

हाय! कुओं से जल भरने का हमें कहीं अधिकार नहीं।

लक्ष्मी कुट्टी देवी की कविता है 'आह्वान'। दरिद्रता, उसका दुख, विदेशी शासन की पीडा आदि के साथ बलिदान की भावना इसमें अभिव्यक्त है। भारती देवी की कविताओं में स्वाधीनता का भाव है।

विमल केरलीय की कविताएँ 'हिन्दी प्रचारक' पत्रिका में प्रकाशित होती थीं। उनमें विशेषकर दार्शनिक भावना प्रमुख है। 'प्राणांबु' इसकेलिए उदाहरण है। त्रिशूर से प्रकाशित पत्रिका 'हिन्दी मित्र' में भी उनकी कविताएँ आयी थीं। 'साधित करो' टी. के. रामन मेनोन की कविता है। जीवन के प्रति आस्था विश्वास तथा प्रार्थना यहाँ प्रकट हैं। पंक्तियाँ हैं-

जहाँ न होते सुख विनिवेश शोकामोद विमोद

राग जहाँ और नहीं है लेश लोभ मोह और अवसाद

स्वतंत्रता पूर्व की कवयित्रियों में एक चर्चित नाम है वी. अम्मिणी। उनकी कविता में उद्‌बोधन है। नारी जाति के प्रति जागरण भाव कविता में प्रकट है। नारी सशक्तीकरण यहाँ देख सकते हैं। जैसे-

क्या नारी तुम हो अबला? दिखया दो अपने को सबला।

पुरुषों से लो अपना बदला नहीं छोड दो पर प्रेम कथा

जागो नारी, जागो नारी क्रांति मचाओं जग में नारी

काँप उठें सब अत्याचारी जागो नारी, जागो नारी

स्वंतंत्रता पूर्व मुख्य रूप से तीन पत्रिकाओं में कविता प्रकाशित होती रही। वे हैं- हिन्दी प्रचार समाचार, दक्षिण भारत और हिन्दी मित्र।

1941 में त्रिवेन्द्रम नाटक- प्रतियोगिता हुई थी। 'प्रेम स्मारक', 'क्षितिज की ओर', 'हम भाई-भाई हैं', 'वीर केरल' आदि का उल्लेख मिलता है। पर पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हुए।

हिन्दी के व्याकरण और कोशग्रंथों की रचना भी इस समय हुई। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की ओर से 'हिन्दी मलयालम कोश' नामक एक ग्रंथ का निर्माण 1940 में हुआ था। इसके संपादक थे प्रो. चन्द्रहासन और प्रो. पी. के. केशवन नायर।

MODULE II

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता- प्रथम चरण

केरल में हिन्दी सर्जनात्मक साहित्य की एक सुदृढ परंपरा स्वातंत्र्योत्तर काल में मिलती है। के. वासुदेवन पिल्लाई, पी.नारायण, पं.नारायण देव, एन. चन्द्रशेखरन नायर, आनंद शंकर माधवन और पी.वी. विजयन ऐसे कवि हैं जो केरल में काफी प्रशस्त हो चुके हैं। इनकी कविताओं में की प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-

a. प्रकृति चित्रण
b. केरल का वैशिष्ट्य
c. मानवीय संवेदना
d. सामयिक समस्याएँ
e. देश प्रेम
f. भारतीयता की भावना
g. सामाजिक विसंगतियाँ
h. व्यंग्य चित्रण

पत्र-पत्रिकाओं में कविता प्रकाशित करनेवाले कवियों में एम. श्रीधर मेनोन, के. दामोदर प्रसाद, वी. ए. केशवन नंपूदिरि, एन. रामन नायर आदि प्रमुख है। वासुदेवन पिल्लाई ने केरल सतसई की रचना शुरू की पर सिर्फ एक सौ दोहे लिख पाये। केरल पर उनकी पंक्ति है-

अति प्राचीन विशुद्ध है केरल का संस्कार
केरलीय इस कार्य में करते है गर्व जरूर।

वासुदेवन पिल्लाई ने 'राष्ट्रवाणी' पत्रिका का संपादन किया।

पी.नारायण 'नरन' की कविताओं देश के प्रति प्रतिबद्धता है। उनकी पंक्तियाँ हैं-

संस्कृतियों का संगम भारत भूले तेरा-मेरा हो

राष्ट्रभाषा ज़िन्दाबाद! मातृभाषा ज़िन्दाबाद

सूक्ष्मनिरीक्षण एवं तदनुकूल अभिव्यक्ति पं. नारायण देव की विशेषता है। हिन्दी के प्रति वे समर्पित हैं। आर्य कैरली, हिन्दी प्रचार समाचार, दक्षिण भारत, केरल भारती आदि पत्रिकाओं में उनकी कविताएँ आदी थीं। 'आरत' संकलन चर्चित है। 'तरंगिणी' उसके बाद प्रकाशित काव्य संग्रह है।

एन. चन्द्रशेखरन नायर की कविताएँ बहुआयामी हैं। नायर ने धरती को माँ मानते हुए कविता लिखी। जब तक मनुष्य प्रकृति की गोद में पुत्र के समान रहेंगा तभी वत्सल भाव प्राप्त होगा। उनकी पंक्तियाँ हैं-

अब तुही से दूर भागा

जा रहा हूँ मनुष्य

खो रह प्रवृत्ति माते

संसार का ही भविष्य

महापुरुषों पर नायर ने कई कविताएँ लिखी हैं। पुरुष पुराण, माँ के सपूत, बीसवीं शती का मानुष आदि उदाहरण हैं। रामराज्य, आज वह मालिक है, हिन्दी के प्रति आदि विशेष उल्लेखनीय कविताएँ हैं। 'हिमालय गरज रहा है' देशप्रेम की कविताएँ हैं।

आनंद शंकर माधवन की कविताओं में प्रमुख हैं- दीपाराधना, वर्षा, घास के फूल, जाह्नवी आदि। वे मानवता के पुजारी हैं। सत्य और परदुख कातरता के कवि हैं वे। उनका हृदय दुखितों केलिए पिघलता है।

एम. श्रीधरमेनोन की एक उदबोधनात्मक कविता है 'सच्चा तप'। वे मानते हैं जनसेवा ही ईश्वरी सेवा है। कविता की पंक्तियाँ हैं-

जाओ, प्यार से अपनाकर उनको, पूजा कर लो तुम

इह में तप है दीन दलित की सेवा और नहीं है कुछ

दामोदर प्रसाद का संग्रह है 'तीन मूर्ति'। क्रूस पर ईसा, जिओ और जीने दो, चाँदनी रात आदि मार्मिक कविताएँ हैं। वी.ए. केशवन नंपूतिरि का 'गंगा पुराण नए युग में' पाठकों को आकृष्ट करती है।

पी. वी. विजयन के संग्रह 'कथ्य और तथ्य' में जीवन के भोगो हुए क्षणों का साक्षात्कार देख सकते हैं। परीक्षक, शोध छात्रा, विशेषज्ञ. एकलव्य आदि महत्वपूर्ण कविताएँ हैं। इस संग्रह की भूमिका पदमासिंह शर्मा कमलेश ने लिखी है। 'क्रुद्ध छात्र' कविता में कवि बताते हैं-

सन सन कर आते हैं उनचासी पवन

क्रुद्ध अतृप्त युवा पीढी क्रुद्ध छात्र

होहल्ला मयाकर परीक्षा भवन से जा जा रहे हैं

उडाकर उतर पुस्तकें

नकल मना है इसीलिए संग्राम है

खडे हैं डरे हुए कंपित तरु-पादप नहीं

ये परीक्षा के निरीक्षक छात्रों के आक्रमण से भीत।

इसप्रकार हम देखते हैं कि सर्जनात्मक काव्य लेखन के प्रथम चरण में कई गणनीय कवियों ने युगीन ज्वलंत समस्याओं पर अपनी लेखनी चलायी है।

2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता-दूसरा चरण

स्वातंत्र्योत्तर काल के दूसरे चरण में कई रचनाकारों ने कविता के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को दर्शाया है। प्रारंभिक दौर में टी.एस. पोन्नम्मा, टी. के. सरला देवी, मुत्तूर राघवन नायर आदि विशेषकर उल्लेखनीय हैं। पोन्नम्मा की कविताओं में भारतीयता एवं राष्ट्रीयता का स्वर प्रबल है। साथ ही नारी उद्धार की भावना भी देख सकते हैं। अमृता प्रीतम को ज्ञानपीठ प्राप्त होने पर पोन्नम्मा ने एक कविता लिखी। पंक्तियाँ हैं-

नारीत्व आज सम्मानित हमारा
मन आमोद तंरगित हमारा
तू आज है पुरस्कृत ज्ञानपीठ है पुलकित।

टी.के.सरलादेवी की कविताओं में भारतीय नारी की पीडा का चित्रण मिलता है। उनमें टीस है, प्रतिबद्धता है। उनकी कविता 'स्मृति की अनुभूति' काफी चर्चित है।

मुत्तूर राघवन नायर का संकलन 'तारापथ', पी. एन. परमेश्वरन का 'हम एक है'. एल. सुनीता का 'नया युग', एन. गोपीनाथ पिल्लाई का 'हिन्दुस्तान हमारा' आदि महत्वपूर्ण संग्रह हैं। कुन्नुकुषी कृष्णन कुट्टी ने कई कविताएँ लिखी हैं। 'रागमालिका' चर्चित है।

टी. के. भास्कर वर्मा की कविताएँ पत्रिकाओं में आती थी। एन. चन्द्रशेखरन पिल्लाई, सी. कृष्णन नायर आदि भी चर्चित कवि हैं। एन. रामन नायर का काव्य संकलन 'गुरु-शिष्य' महावपूर्ण संग्रह है।

जे. रामचन्द्रन नायर के संग्रह 'अगर मैं गौतम होता', 'मंत्री और वादा', एन. रवीन्द्रनाथ की कविताएँ- 'सच्चाई की तलाश', 'कवि से' आदि नयी भावभूमि की

कविताएँ हैं। ए. अरविन्दाक्षन के 'आस पास' प्रमुख काव्य संग्रह है। उनका खंडकाव्य है 'बॉस का टुकडा'। राधाकृष्ण प्रसंग को समकालीन परिप्रेक्ष्य में यह प्रस्तुत करता है।

सी. पी. राजगोपालन नायर, शाहजहाँ, कोतमंगलम रामन नायर, पी.जे. चाक्को, इरिगंल्लूर गोपालन आदि कवि पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं।

एम. षण्मुखन के काव्य संग्रह 'सपना देखना मना है' एम. सी. सुवर्णलता का मौन बौल रहा है, मनु का हम इंतज़ार में हैं आदि समकालीन संवेदना को यथार्थ के विविध धरातलों पर प्रस्तुत करते हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में अनेक कविताएँ प्रकाशित होती आ रही हैं। वल्लिकुन्नु अच्युतन, वी.के. बालकृष्णन नायर, के.सी. मास्टर, वी.करुणाकरन, इरिंगल्लूर गोपालन आदि नाम उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। वैश्वीकृत समाज, बाज़ारीकरण, सूचना प्रौद्योगिक, स्त्री संवेदना, पर्यावरण विमर्श, दलित संवेदना, राजनीतिक अराजकता, मूल्यों का परिवर्तन, समय का अनास्था भाव, वैयक्तिक निराशा एवं आशावादिता, भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संवेदना तक आजकल कविताओं का विषय बन रहे हैं।

3. मलयालम काव्यों का हिन्दी में अनुवाद

मलयालम काव्यों का हिन्दी में अनुवाद दो दिशाओं में हुआ। एक पुस्तक के रूप में, दूसरा पत्रिकाओं में। अभी तक सैकडों कृतियों का हिन्दी में अनुवाद हो चुके हैं। यहाँ संक्षेप में ही चर्चा करना संभव है।

कोचिन विश्वविद्यालय के हिन्द विभाग ने कई प्राचीन मलयालम काव्यों का अनुवाद किया जिसमें रामचरितम, रामकथापाटु, कण्णश रामायण लोकगीत, कृष्णगाथा, रामायणम् चंपु, नैषधम चंपु आदि प्रमुख हैं। वहीं नवीन काव्यधारा नाम से नये कवियों की कविताओं का अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसमें रामपुरत्तु वारियर, केरल वर्मा, पी. कुंजीरामन नायर, इडशेरी राघवन नायर, इडप्पल्लि राघवन पिल्लाई, अक्कित्तम आदि कवि गणनीय हैं।

हिन्दी में अनूदित प्रमुख मलयालम काव्य निम्नलिखित हैं- कृति-मूल्य लेखक-अनुवादक इस क्रम से-

अध्यात्म रामायणम- एषुत्तच्छन- एन.पी. कुट्टन पिल्लाई

आधुनिक मलयालम कविता- सं.एवं अनु. डॉ. ए. अरविन्दाक्षन

एक और नचिकेता तथा अन्य कविताएँ- जी. शंकर कुरुप- नारायण पिल्लाई एवं लक्ष्मीचन्द्र जैन।

कविश्री माला- वल्लत्तोल- एम. श्रीधर मेनोन

चिंताविष्टयाया सीता- कुमारन आशान- मुत्तूर राघवन नायर।

व्यक्ता के आँसू- कुमारन आशान- सुधांशु चतुर्वेदी

दर्शन- ओ. एन. वी- एन. पी. कुट्टन पिल्लाई

बाँसुरी- जी. शंकर कुरुप- जी.नारायण पिल्लाई लक्ष्मीचन्द्र जैन

मलयालम काव्यधारा प्राचीन खंड- अनु. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

मलयालम की नई कविताएँ- संपादक एवं. अनु. जी. गोपीनाथन

वल्लत्तोल की कविताएँ- अनु. रत्नमयी देवी दीक्षित

संध्या- जी. शंकर कुरुप- सुधांशु चतुर्वेदी

सीता- कुमारन आशान- वी.के. हरिहरन उण्णित्तान

हरिनाम कीर्तन- एषुत्तच्छन- के. एन. मेनोन

के. सच्चिदानंदन की कविताएँ- अनु. राजेन्द्र धोडपकर

नंपियार की तुल्लल गाथाएँ- अनु. एन. सदाशिवन नायर

उपर्युक्त कृतियों के अलावा कई कृतियाँ अनूदित हुई हैं। पत्र-पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित होकर आती भी हैं। भाषा, समकालीन भारतीय साहित्य, आजकल, नया ज्ञानोदय, वागर्थ, सदभावना दर्पण, अनुवाद, संग्रथन, साहित्य मंडल पत्रिका, वीणा, मधुमती आदि भारत भर की कई पत्रिकाओं में अनुवाद आते रहते हैं। कुछ पत्रिकाओं के मलयालम केन्द्रित विशेषांक विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

MODULE III

1. केरल में हिन्दी नाटक एवं एकांकी

नाट्य लेखन की दिशा में केरल के लेखकों का गणनीय योगदान है। इस क्षेत्र में एन. चन्द्रशेखरन नायर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। 1962 में उन्होंनें द्विवेणी, कुरुक्षेत्र जागता है, बदला आदि तीन लघुनाटक लिखे। उसके बाद युग संगम, सेवाश्रम, देवयानी आदि महत्वपूर्ण नाटकों की रचना उन्होंने की। समय, देश तथा संस्कृति के प्रति निष्ठा का भाव इन नाटकों में देख सकते हैं।

प्रो. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा ने छः वर्ष बाद तीन एकांकी रचनाओं का प्रकाशन किया। 1972 में एन रामन नायर का नाटक वीरदलवा वेलुत्तंपी प्रकाशित हुआ। यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में लिखा नाटक है। देश की स्वाधीनता की भावना तथा दलवा का बलिदान इसमें हैं। लक्ष्मीकुट्टी अम्मा ने वेलुत्तंपी की वीर आहुति, पषशिराजा का आत्मार्पण और भारतीय नारी तेरी महिमा लिखकर एकांकी साहित्य को समृद्ध किया।

सोमनाथन नायर ने पाँच एकांकियों को अभिशप्त माताएँ शीर्षक से 1982 में प्रकाशित किया। कुंती, तारा, कैकेयी, सीता, रेणुका आदि पर केन्द्रित रचनाएँ हैं। 'आहुति' उनकी दूसरी रचना है। यह नाटक पारिवारिक जीवन से संबंधित है।

वी. एम. गोविंदन नंबीशन ने 'रामराज्य' नाम से अपने नाटक प्रकाशित किया। एकांकियों में के.एम.मणि का 'युग प्रभात', पी.वी. राम वारियर का 'वह अंगूठी', एम. जनार्दनन पिल्लाई वा 'त्यागी' गणनीय हैं।

2. मलयालम नाटक तथा एकांकियों का हिन्दी अनुवाद

तोप्पिल भासी के तीन नाटकों का अनुवाद हिन्दी में हुआ। 'निङ्ङलेन्ने कम्यूनिस्टाक्कि' का अनुवाद 'उत्थान' नाम से लक्ष्मणशास्त्री ने किया। शास्त्री ने 'मूलधनम' को 'पूँजी' नाम से अनुवाद किया। 'पुतिय आकाशम पुतिया भूमि' का अनुवाद 'नया आसमान नई धरती' नाम से विश्वनाथ अय्यर ने किया।

अन्य अनूदित नाटकों में प्रमुख्र हैं-

वेलुत्तंपि दलवा- कैनिक्करा कुमार पिल्लाई- अनु.सुधांशु चतुर्वेदी

मण्णुम पेण्णुम- उरूब- कृष्ण मेनन (शीर्षक-मिट्टी और नारी)

कांचन सीता-सी.एन. श्रीकंठन नायर- सुधांशु चतुर्वेदी

अवन वीटुंम वरुन्नु (वह फिर आ रहा है) - सी.जे.थामस-पी.जी. वासुदेव

कन्यका-एन. कृष्ण पिल्लाई- गोविंद शेनाई

'मलयालम के एकांकी' नाम से नेशनल बुक ट्रस्ट ने पुस्तक प्रकाशित की, जिसका अनुवाद सुधांशु चतुर्वेदी ने किया।

पी.वी.वासुदेवन ने कई एकांकियों को हिन्दी पत्रिकाओं अनुवाद करके प्रकाशित किया। जी.शंकर कुरुप का 'संध्या', पी. केशवदेव का 'जीवनचक्र', के.टी.मुहम्मद का 'टैक्सी', जी. शंकरपिल्लाई का 'शिकार', के. रामकृष्ण पिल्लाई का 'भरत' आदि इसमें प्रमुख्र हैं।

मलयालम के प्रसिध्द बारह एकांकियों का हिन्दी अनुवाद मलयालम एकांकी नाम से नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रकाशित किया। अनुवादक हैं सुधाशु चतुर्वेदी। मूल लेख्रक एवं रचनाएँ इसप्रकार हैं-

के रामकृष्ण पिल्लाई- लकड़ी का घोड़ा

कैनिक्करा कुमार पिल्लाई- विवाह की बात

एन. कृष्ण पिल्लाई- दाव पेंच और हार

टी.एन. गोपिनाथन नायर- मल्लाह

सी.एल. जोस- वेदनाएँ

आनंद कुट्टन- जैसे को तैसा

ओंचरी नारायण पिल्लाई- ईश्वर दुबारा भ्रम में पडता है

तिक्कोटियन- ऐंज़ाइटि न्यूरोसिस

तोप्पिल भासी- पारिवारिक जीवन

के.टी. मुहम्मद- रात की रेलगाडियाँ

जी. शंकर पिल्लाई- बालू के कण

एन.एन. पिल्लाई- श्रीदेवी

MODULE IV

1. केरल के हिन्दी उपन्यास

अन्य विधाओं की अपेक्षा केरल में उपन्यास कम लिखे गये। इस दिशा में प्रथम योगदान देनेवाले हैं आनंद शंकर माधवन। 'अनामंत्रित मेहमान' उनकी प्रमुख कृति है। 'प्रसव वेदना भाग एक', 'प्रसव वेदना भाग दो', और 'पुरुषार्थी' उनके अन्य उपन्यास हैं। उपन्यास 'अनामंत्रित मेहमान' की कथावस्तु उत्तर भारत की है। राम नायर ने मधुआरों पर केन्द्रित 'सागर की गलिया' नामक उपन्यास लिखा।

गोविन्द शेनाय केरल के व्यंग्यकार हैं। भाषा पर आपका पूरा अधिकार है। व्यंग्य का प्रयोग करते हुए आप सामाजिक कुरीतियों पर करारी चोट पहुँचाते हैं। उनका लघु उपन्यास 'किंचित शेषम्' 1984 में प्रकाशित हुआ।

'किंचित शेषम्' की कथा अत्यंत करुण है। पंडित सुब्रय्या शर्मा नामक एक ब्राह्मण के परिवार का करुण चित्र उपन्यासकार प्रस्तुत करते हैं। पं. सुब्रय्या शर्मा सारे गाँव के गुरु हैं और एक छोटे से प्राइमरी स्कूल में वेतन भोगी मास्टर भी हैं। गाँव के लोगों को उनकी बडी जरूरत है। धार्मिक अनुष्ठानों के मुहूर्त-शोधन तथा धर्म संबंधी शंकाओं के निवारण केलिए पंडित जी से सेवा ली जाती है। शेनाय नो उसी वंश का चित्रण किया है जिसमें उनका स्वयं जन्म हुआ है। आपकी भाषा व्यंग्य केलिए पूर्ण अनुकूल है।

2. मलयालम उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद

मलयालम से हिन्दी में कई उपन्यासों का अनुवाद हुआ है। मलयालम का प्रारंभकालीन उपन्यास है ओ.चंदुमेनोन का 'इंदुलेखा'। इसका अनुवाद वी.ए. केशवन नंपूतिरि ने किया है। उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक जीवन चित्रित है। पषश्शिराजा को केन्द्र में रखकर के.एम. पणिक्कर ने 'केरल सिंहम' नामक उपन्यास लिखा, इसका अनुवाद रत्नमयी देवी दीक्षित ने किया। इसी उपन्यास का अनुवाद अभयदेव ने भी किया।

मलयालम से हिन्दी में अनूदित कुछ उपन्यासों का सूची नीचे दे रहे हैं। और भी कई अनुवाद आजकल हो रहे हैं सभी को इसमें शमिल करना यहाँ संभव नहीं है- प्रमुख कृतियाँ, उपन्यासकार तथा अनुवादक के क्रम से-

बाल्य काल सखी-वैक्कम मुहम्मद बशीर- पी.एन. भट्टतिरि

तोट्टियुटे मकन (भंगी का बेटा)-तकष़ी-भारती देवी

दो सेर धान- तकष़ी- भारती देवी

चेम्मीन- तकष़ी- भारती देवी

सुंदरिकलुम सुंदरन्मारुप (सुंदरियाँ और सुंदर)- उरूब- सुधांशु चतुर्वेदी

नालुकेट्टु- एम.टी. वासुदेवन नायर- कृष्ण मेनोन

दादा का हाथी- वैक्कम मुहम्मद बशीर- के.रविवर्मा

वेरुकल (जड़ें)- मलयाट्टूर रामकृष्णन- एन.ई. विश्वनाथ अय्यर

आधी घड़ी-पारप्पुरत्तु- विश्वनाथ अय्यर

कथा एक प्रांतट की- एस. के. पोट्टक्काट- पी. कृष्णन

लौंग- एस. के. पोट्टक्काट-पी.कृष्णन

तुषार- एम.टी. वासुदेवन नायर-हफ्सत

प्रोफेसर- जोसफ मुंडश्शेरी- सुधांशु चतुर्वेदी

मार्ताण्डवर्मा-सी.वी. रामन पिल्लाई- कुन्नुकुषि कृष्णन कुट्टी

सीतम्मा- एन. चन्द्रशेखरन नायर- कवियूर शिवराम अय्यर

नेल्लु-पी.वत्सला- राकेश कालिया